1. पद्य

— सूरदास

camlin
Date :

कवि - परिचय

★ कोड शब्द → सूर, सूरदास
★ जन्म → 1478 (मथुरा के निकट रेणुका - पहली मान्यता)
(दिल्ली के निकट सीही - दूसरी मान्यता)
★ गुरु → वल्लभाचार्य
★ निधन → 1583 (पारसौली)
★ रचना → I सूरसागर
II साहित्य लहरी } ग्रंथ
III सूर सारावली

★ सूरदास को 'वात्सल्य' एवं 'श्रृंगार' का श्रेष्ठ कवि माना जाता है।

★ सूरदास की कविता 'ब्रज भाषा' में होती है।

कविता से

★ इस पद्य को सूरसागर के 'भ्रमरगीत' से लिया गया है।

★ गोपियाँ कृष्ण से मिलने को व्याकुल है, वो बार-बार कृष्ण को मिलने बुला रही है।

★ उद्धव कृष्ण के पास रहते हैं जो सामाचार का आदान-प्रदान करते हैं।

★ गोपियाँ उद्धव के माध्यम से कृष्ण को खबर भेजती हैं तथा अपना हालत बताती है।

Scanned with OKEN Scanner

camlin
Date :

★ कृष्ण उत्तर में योग संदेश देते हैं जिससे गोपियाँ अधिक क्रोधित और व्याकुल हो जाती हैं।

★ योग संदेश गोपियों के लिए विरहाग्नि में घी का काम किया है।

★ गोपियाँ उद्धव की तुलना कमल के पत्ते (पुराइनि पात) एवं तेल की मटकी (गगरी) से की है।

★ गोपियाँ अपनी तुलना हारिल पक्षी से की है, जिस प्रकार हारिल पक्षी हमेशा अपने साथ एक तिनका रखती है। उसी प्रकार गोपियाँ अपने साथ कृष्ण का प्रेम रखती है।

★ गोपियाँ बार-बार कृष्ण को आने के लिए संदेश भेजती है लेकिन कृष्ण हर-बार उत्तर में योग संदेश भेजते है।

★ योग-संदेश से कृष्ण का कहना है कि गोपियों का मन स्थिर नही है इसलिए योग करना चाहिए।

★ गोपियों को लग रहा है कि कृष्ण अब राजनीतिक पढ़ लिए है, इसलिए हमारे हृदय की पीढ़ा नही समझ रहे है।

★ गोपियाँ कहती है कि कृष्ण अपना राजधर्म ठीक से नही निभा रहे है क्योंकि राजा का कार्य है प्रजा की दुःखों को समझना और उसे दूर करना, लेकिन कृष्ण हमारी पीढ़ा नही समझ रहे है।

★ कृष्ण मथुरा जाने के बाद उद्धव के जरिए गोपियों को संदेश भेजते थे।

Scanned with OKEN Scanner

1. गोपियों द्वारा उद्धव को भाग्यवान कहने में क्या व्यंग्य निश्चित है?

Ans:- गोपियाँ उद्धव को भाग्यवान कहते हैं। वे कहती हैं कि उद्धव हमेशा कृष्ण के समीप रहते हैं और हमलोग भाग्यहीन हैं। हम कृष्ण से दुर रहकर विरह की आग में जल रहे हैं।

2. उद्धव के व्यवहार की तुलना किस-किस से की गई है?

Ans:- गोपियों ने उद्धव के व्यवहार की तुलना कमल के पत्ते एवं तेल की गगरी से की है। जिस तरह कमल के पत्ते पानी में रहते हुए भी उसपर पानी का धब्बा नही लगता एवं तेल की गगरी में पानी नही पकड़ता उसी प्रकार उद्धव कृष्ण के समीप रहते हुए भी उसके प्रेम से वंचित है।

3. गोपियों ने किन-किन ~~उदाहरणों~~ उदाहरणों के माध्यम से उद्धव को उलहाने दिए है?

Ans:- गोपियों ने उद्धव के व्यवहार की तुलना कमल के पत्ते एवं तेल की गगरी से करके उलहाने दिए है। जिस तरह कमल के पत्ते पानी में रहते हुए भी उसका धब्बा नही लगता एवं तेल की गगरी में पानी में नही पकड़ता। उसी प्रकार उद्धव कृष्ण के समीप रहते हुए भी उसके प्रेम से वंचित है।

4. उद्धव द्वारा दिए गए योग संदेश ने गोपियों की विरहाग्नि में घी का काम किया है?

Ans:- गोपियाँ कृष्ण से मिलने के लिए तड़प रही है वे घी वे विरह की अग्नि में जल रही थी, कृष्ण के आने से विरह की अग्नि कम हो जाती है लेकिन उद्धव ने योग संदेश लाए जिससे गोपियों की क्रोध बढ़ गई इसलिए प्रश्न के आधार पर कह सकते है कि योग संदेश विरहाग्नि में घी का काम किए

5 'मरजादा न लही' के माध्यम से कौन-सी मर्यादा न रहने की बात की जा रही है?

Ans:- योग संदेश सुनकर गोपियाँ क्रोधित होकर बोलती है कि कृष्ण मर्यादा में नही है उन्होंने हमलोगों के प्रेम का मजाक बना दिया है उन्होंने इस संदेश को भेजने में मर्यादा का पालन नही किया है।

6. कृष्ण के प्रति अपने अनन्य प्रेम को गोपियों ने किस प्रकार अभिव्यक्त किया है?

Ans:- गोपियाँ कृष्ण से अनन्य प्रेम करती है, उसे देखने एवं बाँसुरी की ध्वनि सुनने के लिए हमेशा व्याकुल रहती है। गोपियाँ अपना तुलना हारिल पक्षी से की है। वे लोग स्वयं को हारिल पक्षी एवं तिनका को कृष्ण का प्रेम बताया है।

7. गोपियों ने उद्धव से योग की शिक्षा कैसे लोगों को देने की बात कही है?

Ans:- गोपियों ने उद्धव से योग की शिक्षा उनलोगों को देने की बात कही है जिसका मन स्वयं के पास है। गोपियाँ कहती है हमलोगों का मन तो कृष्ण के पास है, ऐसे में योग से हमलोगों को कोई लाभ नही होगा।

9. गोपियों के अनुसार राजा का धर्म क्या होना चाहिए।

Ans:- गोपियों के अनुसार राजा का धर्म होना चाहिए कि प्रजा के बारे में सोचे। प्रजा के कष्ट का निवारण करें, लेकिन कृष्ण अपना राजधर्म नही निभा रहे है। कृष्ण हमारे कष्टों को नही समझ रहे है।

Scanned with OKEN Scanner

10. गोपियों को कृष्ण में ऐसे कौन से परिवर्तन दिखाई दिए हैं जिसके कारण वे अपना मन वापस लेने की बात कहती हैं

Ans:- गोपियों को कृष्ण में निम्नलिखित परिवर्तन दिखाए दिए जिसके कारण वे अपना मन वापस पा लेने की बात कहती हैं।

(i) गोपियों के अनुसार कृष्ण राजा बनने के बाद हमलोगों को पूर्णतः भूल गए हैं।

(ii) गोपियों के अनुसार कृष्ण राजाशाही सुखों में खो गए हैं जिसकेकारण उन सुखों को छोड़ने में समता लगाता है।

(iii) गोपियों के अनुसार कृष्ण का हृदय कठोर हो गया है जो हमलोगों के प्रेम को समझ नहीं पा रहे हैं।

11. गोपियों ने अपने वाक्चातुर्य के आधार पर ज्ञानी उद्धव को परास्त कर दिया। उनके वाक्चातुर्य की विशेषताएँ लिखिए।

Ans:- गोपियाँ साधारण महिलाएँ थी उद्धव बहुत ज्ञानी थे फि भी गोपियों ने अपने वाक्चातुर्य से परास्त कर दिया जिसका मुख्य कारण निम्न हैं।

(i) गोपियों की बोलने की शैली घुमावदार थी ~~गोपियाँ एक के बाद ए~~

(ii) गोपियाँ एक के बाद एक लगातार प्रश्न पूछती थी जि उद्धव उलझन में पड़ जाते थे।

(iii) गोपियाँ प्रश्न कृष्ण के प्रेम को नजर में रखकर करती थी

22/01/22

10. गोपियों को कृष्ण में ऐसे कौन से परिवर्तन दिखाई दिए हैं जिसके कारण वे अपना मन वापस लेने की बात कहती हैं।

Ans:- गोपियों को कृष्ण में निम्नलिखित परिवर्तन दिखाए दिए जिसके कारण वे अपना मन वापस पा लेने की बात कहती है।

(i) गोपियों के अनुसार कृष्ण राजा बनने के बाद हमलोगों को पूर्णतः भूल गए हैं।

(ii) गोपियों के अनुसार कृष्ण राजाशाही सुखों में खो गए हैं जिसकेकारण उन सुखों को छोड़ने में समता लगाता है।

(iii) गोपियों के अनुसार कृष्ण का हृदय कठोर हो गया है जो हमलोगों के प्रेम को समझ नही पा रहे हैं।

11. गोपियों ने अपने वाक्चातुर्य के आधार पर ज्ञानी उद्धव को परास्त कर दिया। उनके वाक्चातुर्य की विशेषताएँ लिखिए।

Ans:- गोपियाँ साधारण महिलाएँ थी उद्धव बहुत ज्ञानी थे फिर भी गोपियों ने अपने वाक्चातुर्य से परास्त कर दिया जिसका मुख्य कारण निम्न है।

(i) गोपियों की बोलने की शैली घुमावदार थी ~~गोपियाँ एक के बाद ए~~

(ii) गोपियाँ एक के बाद एक लगातार प्रश्न पूछती थी जिसकारण उद्धव उलझन में पड़ जाते थे।

(iii) गोपियाँ प्रश्न कृष्ण के प्रेम को नजर में रखकर करती थी।

7. नेताजी का चश्मा

— स्वयं प्रकाश

camlin
Date :

★ हालदार साहब को प्रत्येक 15 वें दिन कंपनी के काम से के सिलसिले में एक कस्बे से गुजरना पड़ता था।

★ कस्बे में निम्न चीजें थे :-
(i) लड़कों के लिए एक स्कूल
(ii) लड़कियों के लिए एक स्कूल
(iii) एक छोटा-सा सिमेंट कारखाना
(iv) दो ओपन-एयर सिनेमाघर
(v) एक नगरपालिका

★ कस्बे के चौराहे पर नेताजी सुभाष चंद्र बोस की संगमरमर की मूर्ति थी। (लगी)

★ यह मूर्ति ड्राइंग मास्टर मोती लाल ~~चौहरू~~ ने बनाया था, जो कोई भी मूर्ति महिने भर में 'बनाकर पटक देने' की बात करता

★ मूर्ति टोपी की नोक से कोट के दूसरे बटन तक 2 फुट लंबी थी, जिसे बस्ट कहा जाता था।

★ मूर्ति को देखते ही 'पिल्ली चलो', 'तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूँगा', आदि नारे याद आते थे।

★ मूर्ति में बस एक चीज की कमी थी, उसपर चश्मा नहीं था। एक सामान्य काला चौड़ा फ्रेम वाला चश्मा मूर्ति को पहना दिया गया था

★ पहली बार देखकर हालदार साहब ~~बोले~~ मुस्कुराकर बोले, वाह क्या आइडिया है मूर्ति पत्थर का और चश्मा रियल।

★ दूसरी बार जब गुजरे तो दूसरा चश्मा देखा गया। हालदार साहब फिर सोचे मूर्ति कपड़ा नहीं बदल सकते लेकिन चश्मा तो बदल सकते हैं।

Scanned with OKEN Scanner

camlin
Date :

★ तीसरी बार फिर नया चश्मा देखा, तो इस बार हालदार साहब ने पानवाले से पूछ ही लिया, नेताजी हरबार चश्मा कैसे बदल लेते है।

★ पानवाला मुँह में पान ठूँसा हुआ था, वह एक मोटा, काला एवं खुशमिजाज वाला व्यक्ति था, पीछे तरफ पान थूँककर अपना बतीसी दिखाकर बोला, ये कैप्टन करता है साहब।

★ हालदार साहब समझ नही पाए पानवाले ने समझाया कैप्टन चश्मावाला मूर्ति पर चश्मा लगाकर रखता है, जिसे पसंद आता है, उसे दे देता है, और दूसरा पहना देता है।

★ पानवाला हालदार साहब को देखकर बोला, नही साहब, वो लँगड़ा क्या जाएगा फौज में पागल है, पागल! वो देखिए आ रहा है, फोटो-वोटो छपवा दीजिए कही।

★ हालदार साहब को इस तरह देश-भक्त का मजाक उड़ाना पसंद नही आया

★ कैप्टन चश्मावाला एक बेहद बूढ़ा मरियल-सा लँगड़ा सिर पर गाँधी टोपी और आँख में काला चश्मा था।

★ हालदार साहब पूछना चाहते थे, इसे कैप्टन क्यों कहते है, लेकिन जल्दबाजी में थे, तो नही पूँछ पाए।

★ दो साल तक हालदार साहब कस्बे से गुजरते रहे और बदलते हुए चश्मे देखते रहे।

★ एक दिन देखा की मूर्ति पर चश्मा नही है, पानवाले का दुकान भी बंद है।

camlin
Date :

★ अगली बार भी मूर्ति पर चश्मा नही था, तो हालदार साहब पानवाले से पूछ ही लिया।

★ पानवाला भावुक हो गया धोती से आँख पोंछते हुए बोला, साहब! कैप्टन मर गया।

★ हालदार साहब आगे कुछ नही पूँछ पाए सीधे जीप पर बैठे और चल दिए।

★ 15 दिन बाद फिर जब कस्बे से गुजरने वाले थे तो हालदार साहब ने सोचा मूर्ति तो होगा लेकिन चश्मा नही इसलिए यहाँ रूकना नही ड्राइवर को बोला यहाँ जीप मत रोकना।

★ लेकिन आदत से लाचार जैसे ही जीप चौराहे से गुजरा तो हालदार साहब की नजर मूर्ति पर पड़ गई, अचानक बोल उठा गाड़ी रोको, गाड़ी अचानक रुकी, लोग देखने लगे, हालदार साहब उतरकर मूर्ति के पास जाकर सावधान मुद्रा में खड़े हो गए।

★ मूर्ति पर सरकण्डा का रंग चश्मा लगा था, हालदार साहब की आँख भर आयी, सोचा अभी भी देशभक्ति जीवित है।

1. सैनानी न होते हुए भी लोग चश्मावाला को कैप्टन क्यों कहते

Ans- सैनानी न होते हुए भी चश्मावाला को लोग कैप्टन कहते थे क्योंकि उसके हृदय में देशभक्ति कूट कूटकर भरा हुआ था। कैप्टन चश्मावाला नेताजी की मूर्ति को बिना चश्में का नही देख सकते थे। इसलिए हरबार अलग-अलग डिजाइन का चश्मा पहना देते थे, कैप्टन महान स्वतंत्रता सैनानी का भी बहुत सम्मान करते थे।

Scanned with OKEN Scanner

4. पानवाला का एक रेखाचित्र प्रस्तुत कीजिए :-

Ans:- पानवाला एक काला, मोटा, तगड़ा और खुशमिजाज व्यक्ति था। हँसने पर उसकी तोंद थिरकती थी। वह हमेशा मुँह में पान ठूँसे रखता था। किसी से बात करने के लिए दुकान के बगल में थूँककर बात करता था।

8. बालगोबिन भगत

— रामवृक्ष बेनीपुरी

camlin
Date

★ बालगोबिन भगत मँझोले कद के गोरे-चिट्टे आदमी थे, उम्र 60 से ऊपर।

★ बाल पक गए थे, लंबे दाढ़ी नही रखते थे, लेकिन चेहरा सफेद दाढ़ी से चमकते थे।

★ कपड़े में एक लंगोटी पहनता था और सिर पर कबीरपंथी टोपी।

★ ठंडी के महीने में एक कमली ओढ़ लेते थे।

★ मस्तक पर हमेशा रामानंदी चंदन एवं गले में तुलसी की जड़ों की एक माला रहता था।

★ बालगोबिन भगत कोई साधु नही था बल्कि एक गृहस्थ था। थोड़ी खेतीबाड़ी भी एवं एक साफ सुथरा मकान था।

★ बालगोबिन भगत कबीर को अपना साहब मानते थे, उन्ही के भजन गाते थे, उन्हीं के बताए मार्ग पर चलते थे।

★ वह कभी भी झूठ नही बोलते थे, न ही किसी से झगड़ा करते थे, बिना पूछे किसी का सामान भी नही छुते थे।

★ वह शौच के लिए भी अपना खेत जाता था, लोग इसके दिन चर्या से आश्चर्यचकित रहते थे।

★ खेत में जो भी अनाज उगाते थे, चार-कोस दूर कबीर मठ में भेंट के रूप में दे देता था और प्रसाद के रूप में दे देता था और प्रसाद के रूप में जो वापस मिलता था, उसी से जीवन यापन करता था।

camlin
Date :

★ बालगोबिन भगत आसाढ़ की रिमझिम पानी में खेत में रोपनी करते हुए, भजन गा रहे हैं। भजन सुनकर मेड़ पर बच्चे झूमने लगे, आस-पास काम कर रहे लोग भी साथ-साथ गा रहे हैं।

★ वह भादो में अधरतिया गाते थे, खँजड़ी के साथ वे गा रहे थे, "गोदी में पियवा, चमक उठे सखिया।

★ रात में हर कोई सो रहे हैं और बालगोबिन भगत अभी भी गा रहे हैं।

★ कार्तिक में बालगोबिन भगत का प्रभातियाँ शुरू होती है और यह फागुन तक चलता है।

★ इन दौरान वह गाँव में सबसे पहले जगते दो मील दूर नदी से नहा आते और गाँव के बाहर पोखर के भिंडे पर खँजड़ी के साथ भजन गाते थे।

★ इस कपकपाते हुए ठंड में भी मात्र एक कमली के सहारे गाँव के बाहर बैठ कर भजन में खोए हुए है।

★ गर्मियों में वह सांझा गाते थे, शाम के समय गाँव वाले भी उसके आँगन में बैठ कर भजन गाते थे।

★ सांझा गाते समय वे संगीत में इस प्रकार खो जाते थे कि बीच-बीच में खँजड़ी लेकर नृत्य करने लगते थे।

★ बालगोबिन भगत की संगीत साधना का चरम उत्कर्ष उस दिन देखा गया जिस दिन उनका बेटा मरा।

camlin
Date :

★ बालगोबिन भगत को एक बेटा था, वह कुछ भुस्स और बौधा सा था इसी कारण उसे अधिक मानते थे।

★ बालगोबिन भगत का मानना था कि इस तरह के बच्चों को अधिक प्रेम और स्नेह की आवश्यकता होती है।

★ बालगोबिन भगत ने बड़े ही साथ से अपने बेटे की शादी कराई। पतोहू बड़ी ही सुभग और सुशील मिली थी।

★ बालगोबिन भगत की पतोहू घर की प्रबंधिका बनकर पूरे घर को संभाल रही थी।

★ उनका बेटा बीमार हुआ एवं कुछ दिन बाद मर गया।

★ बालगोबिन भगत ने बेटे के शव को आँगन में एक चटाई पर लिटाकर सफेद कपड़े से ढँक दिया, कुछ फूल बिखरा दिए, सिरहाने पर चिराग जला दिया एवं सामने आसन लगाकर गीत गाने लगे।

★ वही राग एवं भाव में गीत गा रहे थे जिस भाव में हमेशा गाते थे। गाते-गाते कभी पतोहू के पास जाते और उसे रोने के बदले उत्सव मनाने को कहते।

★ वह कह रहे थे, आत्मा परमात्मा से मिलने चली गई, विरहनी अपने प्रेमी से जा मिली, भला इससे ज्यादा आनंद की बात क्या होगी।

★ बेटे के क्रिया-कर्म में तुल नही किया, पतोहू से अग्नि दिलाई और श्राद्ध की अवधि पूरी होते ही उसके भाई को बुलाकर कहा इसकी दूसरी शादी करवा दो।

camlin
Date :

★ पतोहू रो-रोकर कह रही थी, मैं चली गई तो आपका सेवा कौन करेगा, बुढ़ापे में सेवा कौन करेगा।

★ बालगोबिन भगत का फैसला अटल था, वह बोला अगर तुम नहीं जाओगी तो मैं चला जाता हूँ।

★ बालगोबिन भगत की इस फैसले को मानते हुए उसकी पतोहू को जाना पड़ा।

★ बालगोबिन भगत प्रति वर्ष 30 कोस (120 km लगभग) दूर गंगा नहाने पैदल ही जाते थे।

★ यह यात्रा 4-5 दिन में समाप्त होता, इस बीच वह उपहास रखता था, सिर्फ रास्ते में पानी पीते थे।

★ अंतिम बार गंगा से लौटने के बाद उसकी तबीयत बिगड़ गई, फिर भी उसके गीत के राग में कोई अंतर नहीं दिखायी दिया।

★ अगली सुबह भोर में लोगों को बालगोबिन का भजन सुनाई नहीं दिया, जाकर देखा तो उसका पंजर पड़ा हुआ था।

Scanned with OKEN Scanner

camlin
Date :

1. खेतीबारी से जुड़े गृहस्थ बालगोबिन भगत अपनी किन चारित्रिक विशेषताओं के कारण साधु कहलाते थे?

Ans- बालगोबिन भगत कबीर को अपना साहब मानते उन्ही के बताए मार्ग पर चलते। वह कभी झूठ नही बोलते, किसी से झगड़ा नही करते। बिना पूछे किसी का सामान नही छूते। शौच के लिए भी वे अपना ही खेत जाते। खेत मे जो अनाज उगता उसे कबीर मठ में भेंट के रूप में देते और जो प्रसाद के रूप में वापस मिलता उसी से जीवन-यापन करते।

2. भगत की पुत्रवधु उन्हें क्यों नही छोड़ना चाहती थी?

Ans- भगत की पुत्रवधु उन्हें छोड़कर नही जाना चाहती थी क्योंकि उसे लगता था कि अगर वो चली गई तो बालगोबिन भगत अकेले हो जायेंगे। बुढ़ापे में उनकी सेवा कौन करेगा।

3. भगत ने अपने बेटे की मृत्यु पर अपनी भावनाएँ किस प्रकार व्यक्त की?

Ans- भगत ने बेटे के शव को आँगन में एक चटाई पर लिटाकर सफेद कपड़े से ढँक दिया, कुछ फूल बिखरा दिए, सिरहाने पर चिराग जला दिया एवं सामने आसन लगाकर गीत गाने लगे। वे कह रहे थे आत्मा परमात्मा से मिलने चली गई, बिरहनी अपने प्रेमी से मिलने चले गई। भला इससे ज्यादा आनंद की बात क्या होगी।

4. भगत के व्यक्तित्व और उनकी वेशभूषा को अपने शब्दों में चित्र प्रस्तुत कीजिए

Ans- भगत कोई साधु नही बल्कि एक गृहस्थ थे। उनके बाल पक गए थे, लंबी दाढ़ी नही रखते थे। लेकिन चेहरा सफेद दाढ़ी से चमकता रहता।

5. बालगोबिन भगत की दिनचर्या लोगों के अचरज का कारण क्यों थी?

Ans बालगोबिन भगत की दिनचर्या बाकि लोगों से अलग रहती थी। वे कपकपाती ठण्ड में भी मात्र एक कमली के सहारे गाँव के बाहर बैठकर भजन में खो जाते गर्मियों में शाम के समय आँगन में बैठकर साँझा गाते थे।

6. पाठ के आधार पर बालगोबिन भगत के मधुर गायन की विशेषताएँ लिखिए।

Ans बालगोबिन भगत जब खेती करते हुए गीत गाते तो बच्चे, बूढ़े सब उनकी राग से राग मिलाकर गाने लगते। साँझा गाते समय वह संगीत में इस प्रकार खो जाते थे कि बीच-बीच में खँजड़ी लेकर नृत्य करने लगते।

Scanned with OKEN Scanner

2. राम - लक्ष्मण - परशुराम संवाद

— ~~संवाद~~ तुलसीदास

कवि - परिचय

* ☆ जन्म = 1532 (जिला - बाँदा, UP)
* ☆ मृत्यु = 1632 (काशी)

☆ तुलसीदास का बचपन बहुत संघर्षपूर्ण था। जीवन के आरंभ में ही माता - पिता बिछड़ गया।

☆ गुरुकृपा से उन्हें रामभक्ति का मार्ग मिला। रामचरितमानस का रचना उनका सृजनात्मक कौशल का उदाहरण है।

☆ तुलसीदास के रामचरितमानस की रचना अवधि भाषा में किया।

☆ तुलसीदास की विनयपत्रिका एवं कवितावली की रचना ब्रजभाषा में किया।

☆ प्रमुख रचनाएँ :-
(i) रामचरितमानस
(ii) कवितावली
(iii) गीतावली
(iv) दोहावली
(v) कृष्णगीतावली
(vi) विनयपत्रिका
(vii) हनुमान - चालीसा
आदि

☆ प्रस्तुत पाठ रामचरितमानस का अंश है, इसे रामचरितमानस के बालखण्ड से लिया गया है।

camlin
Date :

★ इस पाठ में सीता स्वयंवर की बात कही गयी है, जिससे राम के द्वारा धनुष तोड़ जाने पर परशुराम का क्रोध का वर्णन है।

★ राम का विनय एवं विश्वामित्र के समझाने पर परशुराम का क्रोध शांत होता है।

★ इस बीच राम-लक्ष्मण एवं परशुराम के बीच जो संवाद होता है, उसी का वर्णन इस पाठ में है।

★ इसमें परशुराम के क्रोध ~~भरे~~ भरे वचनों का लक्ष्मण व्यंग्य भरे उत्तर देता था, जिससे उसका क्रोध और अधिक हो जाता था।

★ इस पाठ में लक्ष्मण का <u>वीर रस</u> का भी वर्णन किया गया।

कविता से

★ परशुराम के क्रोध करने पर श्रीराम कहते है, धनुष तोड़ने वाला कोई आपका ही सेवक होगा।

★ परशुराम क्रोध में कहते है, जिसने धनुष तोड़ा ~~उसने~~ उन्होंने अपना मृत्यु को आमंत्रित किया है।

★ ये बात सुनकर लखन (लक्ष्मण) बोलते है एक मुनि के मुख से ऐसी बातें शोभा नही देता प्रभु।

★ लक्ष्मण के बातों से परशुराम का क्रोध अधिक तीव्र हो जाता है।

Scanned with OKEN Scanner

camlin

Date :

★ लक्ष्मण कहते है, सभी धनुष तो एक समान है, फिर इसके टूट जाने पर इतना क्रोध क्यों? बचपन में हमने न जाने कितने धनुष तोड़े है उस समय आपने कुछ नही किया फिर अभी क्यों?

★ लक्ष्मण कहते है, वैसे भी यह धनुष पुराना हो चुका था, श्रीराम के छुते ही टूट गया।

★ क्रोध में परशुराम कहते है कि मैंने क्रोध में बहुतों का प्राण लिया है, मुझे और हत्या करने के लिए विवश न करो

★ लक्ष्मण ने वीर योद्धा की विशेषता भी बताई।

★ अंतीम में जब परशुराम का क्रोध चरम सीमा पर चढ़ गया तब श्रीराम ने अपना वास्तविक रूप दिखाया और कहा जो आप है वही मैं भी हुँ, आपमें और मुझमें कोई अंतर नही है।

★ परशुराम ने राम में अपना स्वरूप देखा और पुर्णतः शांत हो गया।

16/05/16

Scanned with OKEN Scanner